पर्युषण पर्व का चौथा दिन

प्रियतापूर्ण भाषा का प्रयोग करें : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 8 सितम्बर, 2010

आचार्यश्री महाश्रमण ने पर्युषण पर्व के चौथे दिन वाणी संयम पर अपने उद्‌बोधन में कहा कि वाणी को भी आभूषण बनाया जा सकता है, दूसरे आभूषण तो नष्ट हो जाते हैं या खराब हो जाते हैं किंतु वाणी का आभूषण खराब नहीं हो सकता यदि वाणी के साथ सच्चाई जुड़ जाए, सच्चाई को वाणी के साथ जोड़ने का बड़ा आधार है।

एक कवा किसी से कुछ लेता नहीं है और एक कोयल किसी को कुछ देती नहीं है किंतु उसकी अपनी वाणी ही दूसरों को प्रभावित करती है, मनुष्य को प्रियतापूर्ण भाषा बोलनी चाहिए जिससे वाणी भी आभूषण बन जाती है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने यह भी कहा कि मनुष्य का शरीर किस-किस रूप में पैदा हो जाता है इसलिए उसे शरीर, स्वास्थ्य, सत्ता, कूल का अहंकार नहीं करना चाहिए, अपने आपको बड़ा दिखाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। जब तक स्वस्थ है तब तक काम करते रहना चाहिए।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि वाणी संयम विवेक की चेतना जगाने का प्रतिक शब्द है, संयम से बोलना है, भाषा को बिना सोचे समझे नहीं बोलनी चाहिए, संक्षेप में कहें उसका भी विवेक हो कि संक्षेप में किस तरह से बात को प्रस्तुत किया जा सकता है, बात को कब कहनी चाहिए, जिस समय बोलना अपेक्षित हो उसी समय बोलना चाहिए और कम शब्दों में अर्थपूण बात को कहना चाहिए। बोलते समय सामने वाले व्यक्ति की प्रतिक्रया को भी देखना चाहिए कि सामने वाला व्यक्ति बात को सुन रहा है या नहीं।

मुज्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने कहा कि मनुष्य को विवेक पूर्ण नहीं बोलने की अपेक्षा मौन रहना ज्यादा अच्छा है, अधिक से अधिक वचन को प्रवृत करने का प्रयत्न करना ही साधना का रहस्य हो सकता है।

मुनि श्रेयांस कुमार ने गीत की प्रस्तुत दी, संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

- **शीतल बरड़िया** (मीडिया संयोजक)